www.ved-yog.com

मीमांसा दर्शन में कर्म-कर्त्ता की बहुत सुन्दर विवेचना की गई है। इस सन्दर्भ में कहा गया है — **प्रयोग पुरुषश्रुतेर्यथाकामी प्रयोगे स्यात्** अर्थात् जीवात्मा इच्छानुसार कर्म करने में पूर्णरूपेण स्वतन्त्र है। कर्मफल का वैदिक सिद्धान्त जितना विशद है उतना ही वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक भी। तार्किक और व्यावहारिक रूप से वैदिक कर्मफल सिद्धान्त को समझने के उपरान्त कर्म और कर्मफल को लेकर जितनी जिज्ञासाएँ, भ्रान्तियाँ और समस्याएँ हैं, समाप्त हो जाती हैं। विश्व में जितने भी मत-मतान्तर हैं सभी में एकांगिकता द्रष्टव्य होती है। इस लिए कर्म और कर्मफल को लेकर समस्याएँ अनवरत बनी रहती हैं। भारतीय दर्शनों में सभी कर्म एवं कर्मफलगत समस्याओं का बहुत ही दार्शनिक (तार्किक), व्यावहारिक, धार्मिक और वैज्ञानिक निराकरण किया गया है। कृत कर्मों का फल देने वाला कौन है, और जीवात्मा की कर्म और कर्मफल के सन्दर्भ में क्या स्थिति है, इसकी योगदर्शन में बहुत ही गवेषणापूर्वक विवेचना की गई है। योगदर्शन के साधनपाद के तेरहवें सूत्र में कहा गया है — **सतिमूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः**। कहने का तात्पर्य यह है कि अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश, इन मूल कारणों के होने पर उनको कर्माशयों का फल जाति, आयु व भोग ये तीन जीवात्मा को परमेश्वर की व्यवस्था में निष्पक्ष रूप से मिलते हैं। वेद और दर्शनों की विवेचना सबसे अधिक वैज्ञानिक, तार्किक, व्यावहारिक एवं आध्यात्मिक है। विश्वभर के सभी मतों के मुख्य ग्रन्थों में वेद और भारतीय दर्शनों से लेकर और बहुत कुछ अपनी मिलाकर कर्म और कर्मफल के सिद्धान्त का निर्माण किया गया। वेद और दर्शनों के अतिरिक्त जो मतों के संस्थापक या उनके अनुयायियों ने सृजित करके मिलाया, वह विवाद उत्पन्न करने वाला है। इनके द्वारा उत्पन्न विवादों को निपटाने का एक ही मार्ग है — वेद प्रतिपादित कर्म एवं कर्मफल सिद्धान्त को पूर्णतः अपना लिया जाए। जब तक ऐसा नहीं किया जायेगा तब तक कर्म एवं कर्मफल को लेकर विवाद उत्पन्न होते रहेंगे। विश्व में धर्म और अध्यात्म के नाम पर जो विवाद हजारों वर्षों से होते रहे हैं, उसके कारण को समाप्त करने की सार्थक पहल को, महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त आजतक किसी ने नहीं की। महर्षि ने आह्वान किया — **हे दुनिया के लोगों आओ मिलकर बैठकर उन समस्याओं को निपटाएँ और एक ऐसी सहमति बनाएँ जिससे धर्म के नाम पर कोई विवाद न रह जाए**। लेकिन किसी भी मत-मतान्तर के संस्थापक या प्रमुख ने इस महान आह्वान को स्वीकार नहीं किया। आज जितनी सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ हैं, वे किसी न किसी रूप से मनुष्यगत संकीर्णताओं और स्वार्थवादी प्रवृत्तियों से जुड़ी हुई हैं। ये तब तक समाप्त नहीं हो सकती जब तक कर्म, कर्मफल सिद्धान्त, धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म के बारे में ठीक प्रकार से जानकारी विश्व समाज को नहीं हो जायेगी।

कर्म एवं कर्मफल दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कर्म करने में मनुष्य जितना

www.ved-yog.com

स्वतन्त्र है उतना ही कर्मफल के मामले में परतन्त्र। क्योंकि कर्मफल का विधान मनुष्य के हाथों में नहीं है। ईश्वरीय नियम ही कर्मफल उत्पन्न करते हैं। यह विचार और सिद्धान्त **"कर्म एवं कर्मफल मीमांसा"** नामक पुस्तक में भी बहुत ही गवेषणात्मक, वैज्ञानिक, शास्त्रीय और दार्शनिक रूप से वर्णित है। चारों वेदों, सभी दर्शनों, उपनिषदों, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय, गीता, महाभारत, हितोपदेश, मनुस्मृति और चाणक्यनीति जैसे प्रामाणिक और प्रेरक पुस्तकों की सहायता, इस ग्रन्थ को सृजित करने में ली गई है। जिस प्रकार से शक्तिशाली, प्रामाणिक और उपयोगी पुर्जो के माध्यम से एक श्रेष्ठ मशीन का निर्माण किया जा सकता है, उसी प्रकार से हर प्रकार से श्रेष्ठ ग्रन्थों के स्वाध्याय, चिन्तन और सन्दर्भ के माध्यम से श्रेष्ठ की रचना होती है। पुस्तक के लेखक आर्य मनीषी श्री सतीश आर्य जी ने उन अद्वितीय पुस्तकों की अपनी पुस्तक सृजन में सहायता ली है, जो मानव मात्र का कल्याण करने वाली हैं। पुस्तक में दर्शन, विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, समाज और व्यवस्था पर जो सन्तुलन बिठाया है वह अद्वितीय है। कई अध्याय मौलिक, वैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित और नवविचार उद्भावक हैं। कर्म और कर्मफल सिद्धान्त से सम्बन्धित हर विषय और सन्दर्भ पुस्तक में बहुत ही गवेषणात्मक, तार्किक और सैद्धान्तिक रूप से दिये गये हैं। पुस्तक की भाषा-शैली और प्रकाशन बहुत ही उम्दा है। पुस्तक के अन्त में शंका-समाधान का अध्याय अत्यन्त उपयोगी, प्रेरक और विचारयुक्त है। विद्वान् और जनसाधारण के लिए लिखी यह पुस्तक, समाज के हर व्यक्ति के लिए कई सन्दर्भों में उपयोगी हैं। लेखक ने बैंककर्मचारी होते हुए भी जिस प्रकार से बृहद स्वाध्याय करके इसे सृजित किया है, वह सराहनीय है।

कर्म और कर्मफल को लेकर लाखों वर्षों से वैचारिक उन्मेष भाव-बोधित होते रहे हैं। लेखक ने कर्म और कर्मफल सिद्धान्त से सम्बन्धित जितने प्रश्न और उत्तर हो सकते हैं, पुस्तक में बहुत ही गवेषणापूर्ण तरीके से वर्णित किये हैं। ईश्वरीय और मानवीय एवं वैज्ञानिक सिद्धान्तों के भेद भी बहुत ही तार्किक रूप से दिये गये हैं। योगदर्शन और अन्य दर्शनों का सन्दर्भ कर्म और कर्मफल के सन्दर्भ में जिस प्रकार विवेचित किया गया है वह अद्भुत है।

सत्य का पालन और असत्य का त्याग करके मनुष्य अपने परम लक्ष्य तक पहुँच सकता है। सत्य के पालन के लिए कर्म की गति और उसके फल के बारे में जानना आवश्यक है। लेखक ने इसी सत्य के पालन को ही सबसे अधिक प्राथमिकता दी है।

पुस्तक लेखन का उद्देश्य कर्म और कर्मफल के वैदिक सिद्धान्तों को समाज के हर व्यक्ति तक पहुँचाना है, जो स्तुत्य है। समाज का हर व्यक्ति पुस्तक के स्वाध्याय के उपरान्त अनुभव करेगा कि अभी तक उसकी जो मान्यता, धारणा और विचार, **कर्म और कर्मफल** के सन्दर्भ में थे, वे कितने एकांगी और दुराग्रहपूर्ण थे।

लेखक द्वारा जिज्ञासुओं के हर सम्भावित प्रश्न और उसका उत्तर देकर जो

www.ved-yog.com

परोपकार पूर्वक कार्य किया है, उसके लिए लेखक की प्रशंसा की जानी चाहिए। श्रेष्ठ पुस्तक लिखने का उद्यम हर किसी के वश की बात नही है — वह भी राजकार्य करते हुए। लेखक ने न केवल इस विशद विषय पर ही लेखनी उठायी है, बल्कि उनके "**पातञ्जल योगदर्शन**" (व्यास भाष्य और भोजवृत्ति सहित) पर वेदानुकूल ग्रन्थों के प्रमाणपूर्वक वृहद व्याख्या और "**परमात्म-साक्षात्कार — कैसा ?**" जैसे गम्भीर ग्रन्थ भी प्रकाशित हो चुके हैं। लेखक इसी प्रकार आगे भी नूतन पुस्तकों का सृजनकर ज्ञान, स्वाध्याय, प्रेरणा और सुधार के मार्ग का पथिक बने रहें, इन्हीं अनेक शुभकामनाओं के साथ लेखक के दीर्घायु, पूर्णस्वस्थता और ऐश्वर्य प्राप्ति की कामना करता हूँ।

सदभावी

डा० अखिलेश आर्येन्दु

सम्पादक, आर्य सन्देश, गवेषक, शब्दशिल्पी और साहित्यकार

— ooooo —